मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

EHD-02

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी. डी. पी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2022
(ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी)
ई.एच.डी.-02 : हिन्दी काव्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : $3 \times 12 = 36$

(क) निसिदिन बरसत नैन हमारे।

सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब तें स्याम सिधारे।

दृढ़ अंजन लागत नहिं कबहूँ, उर कपोल भये कारे।

कंचुकि नहिं सुखत सुनु सजनी उर-बिच बहत पनारे।

सूरदास प्रभु अंबु बढ्यो है, गोकुल लेहु उबारे।

कहे लौं कहौं स्यामघन सुन्दर बिकल होत अति भारे।

(ख) झलकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलन में छवि-फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलौल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग-अंग तरंग दुति की, परि है मनौ रूप अबै धर च्वै।

(ग) मैं नीर भरी दु:ख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।

(घ) वह कैद कर लाया गया ईमान .....
सुलतानी निगाहों में निगाहें डालता
बेखौफ नीली बिजलियों को फेंकता
खामोश !!
सब खामोश
मनसबदार,/शायर और सूफी,
अलगजाली, इब्ने सिन्ना, अल-बरूनी,
आलिमो फाजिल सिपहसालार, सब सरदार
हैं खामोश !!

(ङ) युद्ध को तुम निन्द्य कहते हो मगर,
जब तलक है उठ रही हैं चिनगारियाँ
भिन्न स्वार्थों के कुलिश-संघर्ष की,
युद्ध तब तक विश्व में अनिवार्य है।
और जो अनिवार्य है उसके लिए
खिन्न या परितप्त होना व्यर्थ है।

2. निर्गुण काव्यधारा में कबीर का स्थान निर्धारित कीजिए। 16

3. भक्तिकाव्य के आलोक में मीरा-काव्य की विशेषताएँ बताइए। 16

4. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य की तुलना प्रस्तुत कीजिए। 16

5. द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। 16

6. निराला काव्य की प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। 16

7. भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य के वस्तु पक्ष और शिल्प पक्ष पर प्रकाश डालिए। 16

8. प्रगतिशील काव्यधारा में नागार्जुन काव्य का महत्त्व रेखांकित कीजिए। 16

9. 'कुरुक्षेत्र' प्रबंध काव्य के महत्त्व और प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $8 \times 2 = 16$

(क) आदिकाव्य का परिचय

(ख) रहीम काव्य

(ग) समकालीन हिन्दी काव्य

(घ) सूफी काव्य